तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

जून-2020

सप्तगिरि का परिशिष्ट

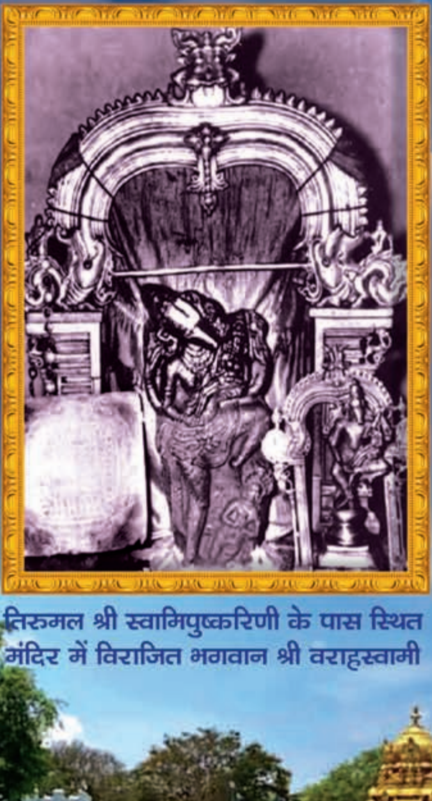

तिरुमल श्री स्वामिपुष्करिणी के पास स्थित मंदिर में विराजित भगवान श्री वराहस्वामी

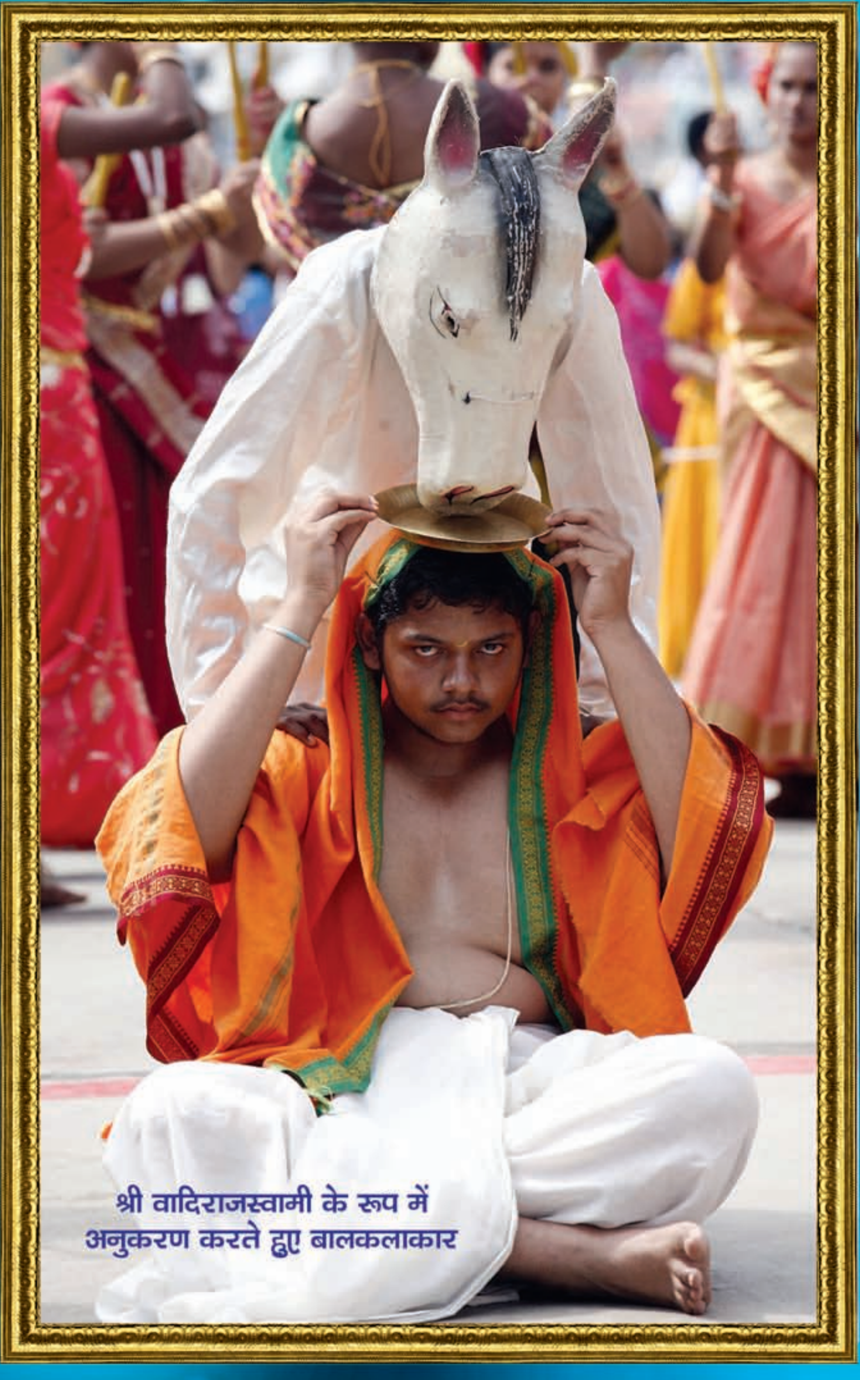

श्री वादिराजस्वामी के रूप में
अनुकरण करते हुए बालकलाकार

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सप्तगिरि का परिशिष्ट

जून-२०२०

वर्ष-०१
अंक-०४

विषयसूची

हिन्दू देवता — यज्ञपुरुष श्रीमहाविष्णु का वराह अवतार — 04
श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

पन्निद्दराल्वार — श्री भक्तिसार (तिरुमलिशै) आल्वार — 06
श्री कमल किशोर हि. तापडिया

कन्नड हरिदासवरेण्य — श्री वादिराजस्वामी — 08
श्रीमती सी.मंजुला

चित्रकथा — श्री स्वामिपुष्करिणी माहात्म्य — 10
तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री के.द्वारकानाथ

बालनीति — सब से कीमती हीरा — 14
श्री सी.सुधाकर रेड्डी

विशिष्ट बालक — 16

'क्विज' — श्रीमती एन.मनोरमा — 17

चित्रलेखन — 18

मुखचित्र - श्री वराहस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री पेरियाळ्वार चित्र।

हिन्दू देवता

यज्ञपुरुष श्रीमहाविष्णु का वराह अवतार

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

भगवान श्रीहरि विष्णु का तीसरा अवतार वराह अवतार के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीहरि ने पृथ्वी देवी (भूदेवी) का उद्धार करने के लिए वराह (भुंड-सुवर) प्राणी का अवतार लिया और पृथ्वी का पुनर्निर्माण किया।

पौराणिक कथा इस प्रकार है। एक समय की बात है। ब्रह्माजी का प्रिय पुत्र स्वायंभुव मनुराजा और उनकी पत्नी शतरूपा, पृथ्वी के उद्धार के लिए ब्रह्माजी के पास गये और कहने लगे, पिताजी हमारी भावी प्रजा के लिए चिंतित है। भावि प्रजा के लिए सही निवासस्थान के लिए प्रार्थना की, क्योंकि

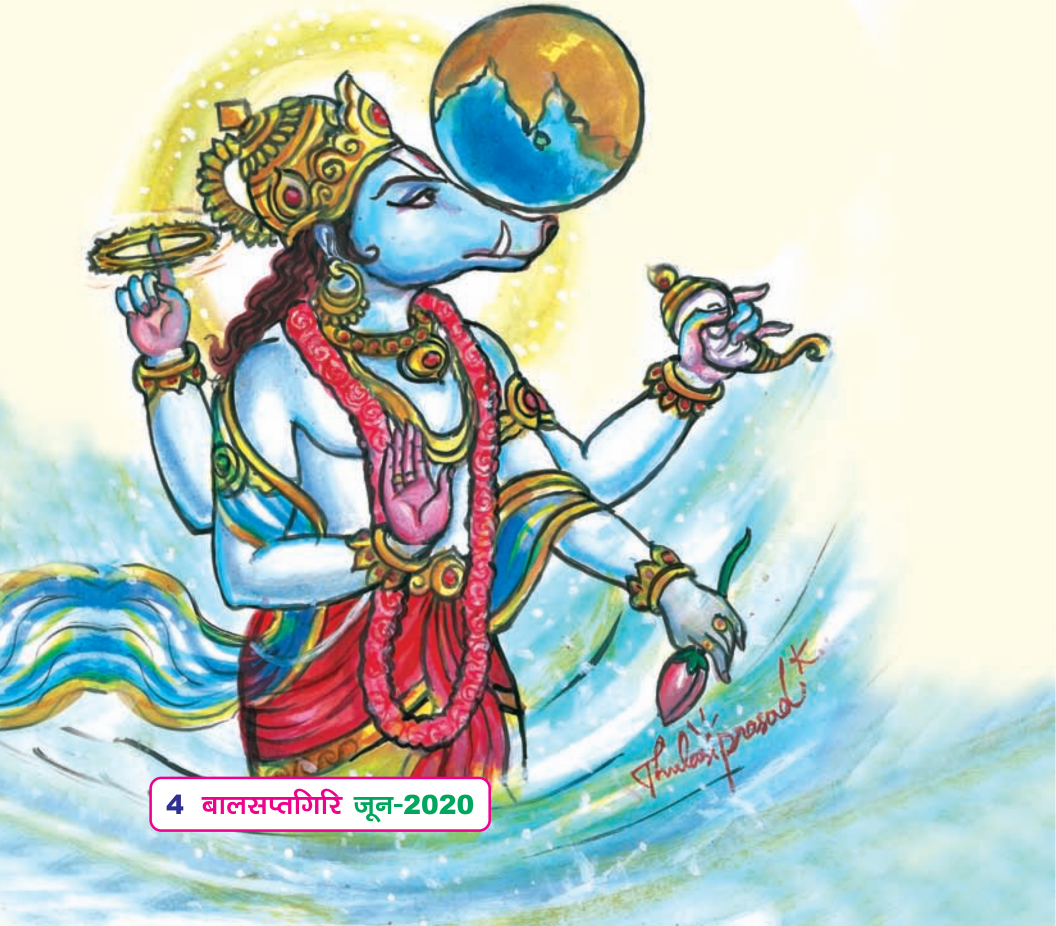

इस समय पृथ्वी जलप्रलय में रसातल में डूबी हुई थी। मनु और शतरूपा की प्रार्थना से ब्रह्माजी ने अपनी नासिका से अंगुष्ठ के समान वराह प्राणी को उत्पन्न किया। क्षणमात्र में वराहशिशु ने बहुत बडा स्वरूप धारण कर लिया। वराह अवतार कठोर था। वराह ने बडी गर्जना की, गर्जना सुनकर जनलोक, तपलोक और सत्यलोक में देवतागण, मुनीगण ने वेदों के पवित्र मंत्रों से भगवान की स्तुति की। वेदों में वराह स्वरूप का अद्भुत वर्णन मिलता है। वराह अवतार होने के बावजूद भी हाथी समान बहुत बडा स्वरूप था, शरीर बडा कठोर था, शरीर के बाल तीक्ष्ण और कठोर था, दाढो और दांत सफेद था, आंखो में से तेज निकल रहा था, स्वरूप बहुत शोभायमान थे। वराह अवतार स्वयं यज्ञपुरुष श्रीमहाविष्णु का अवतार था फिर भी वराह की प्रकृति के अनुसार वे सुंघ सुंघ कर जल में पृथ्वी की तलाश करने लगे। अपनी तीक्ष्ण दांतों से पानी को काटकर, समुद्र को काटकर रसातल में पृथ्वी के पास पहुंचे और अपनी बड़ी-बड़ी दांतों के पर पृथ्वी को रखकर जलराशी से बाहर निकल रहे थे, इस वक्त महा पराक्रमी असुर हिरण्याक्ष भगवान कि गति में बाधा डालने के लिए आ गये, वो पृथ्वी को बाहर निकालना नहीं चाहते थे, क्योंकि सर्वत्र उसका साम्राज्य चाहता था। प्रभु के मार्ग में अवरोध बनकर आये और दोनों के बीच महा गदा युद्ध हुआ। वराह ने क्षणभर में हिरण्याक्ष का वध कर दिया। फिर वराह ने अपने तीक्ष्ण दांतों पर पृथ्वी को रखकर जलराशी से बाहर लेकर आये और पृथ्वी (भूदेवी) का उद्धार किया, तब ब्रह्माजी, मरिची और देवतागण ने वेद मंत्रों से वराह भगवान की सुंदर स्तुति की। वराह के स्वरूप का ये दर्शन दुर्लभ होता है। वराह कि त्वचा में गायत्री और रोम में छंद, नेत्रों में कुश, चार चरणों में घी होता हैं। अधवर्यु, उदारता और ब्रह्म (रुत्वीजों का कर्म) विद्यमान थे, मुख में ब्रमभाग पात्र, कंठ में ग्रह सोमपात्र विद्यमान थे। स्वयं साक्षात् यज्ञपुरुष ही थे। वराह भगवान ने पृथ्वी को जलराशी पर स्थापित किया और अपना दिव्य तेज पृथ्वी में भर दिया। पृथ्वी पर पुनः स्रृष्टी रचना स्थापित हो गई। इस तरह श्रीहरि विष्णु ने वराह अवतार लेकर भूदेवी का उद्धार किया। इस वराह अवतार को कोटि कोटि नमन।

* * *

पन्निद्दराल्वार

श्री भक्तिसार (तिरुमलिशै) आल्वार

- श्री कमल किशोर हि. तापडिया

श्री भक्तिसार प्रचार भक्ति ज्ञान के कर्त्तार हो। कणि कृष्ण के आचार्य श्रीपति चक्र के अवतार हो।
आल्वार लखि निष्ठा तुम्हारी चकित गिरिजापति भये। तुम स्वामि भुजवा भामिनी को सिद्धासुर कामिनि किये।।

जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने संसार संरक्षण के लिये भूतल पर अवतार लिया और कारागार में जन्म लेकर गोकुल में लालन-पालन संवर्धन प्राप्त किया। इसी तरह श्री भक्तिसार स्वामी का अवतार हुआ। जैसे भगवान श्रीकृष्ण के जन्मकाल में संसार की परिस्थिति में महान परिवर्तन हुआ, सूखे वृक्ष हरित हुये, रसहीन औषधियाँ फल रसयुक्त, गायें दुधारी एवं सर्वत्र मंग़लमय वातावरण उपस्थित हो गया था वैसे ही भार्गव ऋषि के द्वारा कनकांगी के गर्भ से श्री भक्तिसार अवतरित हुये और फिर लकड़ी के सामान बेचने वाले के गृह में उनका पालन-पोषण हुआ।

विभव नामक संवत्सर के पौष मास की कृष्ण पक्ष, दशमी, गुरुवार, मघा नक्षत्र, तुला लग्न के दिन भगवान के श्रीसुदर्शन चक्र के अंश से युक्त श्री भक्तिसार मुनि का अवतार हुआ। श्रीमहायोगी ने विश्वक्सेन सूरी की कृपा से भक्तिसार स्वामी का पंचसंस्कार सम्पन्न किया और शरणागति की दीक्षा दी एवं अच्छी प्रकार से अष्टांग योग तथा ध्यान के विषयभूत जगत के कारण भूत परतत्त्व वस्तु भगवान श्रीमन्नारायण का उपदेश देकर कृतार्थ किया।

उन्होंने द्रविड़ भाषा में भगवत सम्बन्धी अनेक ग्रथों की रचना की। श्री भक्तिसार मुनि ने बड़े ही यत्नपूर्वक विष्णुतत्त्व से इतर सिद्धांत का निराकरण करते हुए श्री महद्योगी के उपदेशानुसार श्रीवैष्णव मत की स्थापना की। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सदैव सभी को परात्पर वस्तु के रूप में भगवान श्रीमन्नारायण का ही ध्यान करना चाहिये। इस प्रकार श्रीपति को अपने हृदय कमल में ध्यान करते हुए पुण्य कैरविणी नदी के तट पर सात सौ वर्षों तक निवास किया। श्री शंकर और पार्वती को भी अपनी भक्ति के द्वारा आश्चर्य चकित कर दिया। शुक्तिहार और आयुर्वेदिक रस शास्त्र के अद्भुत विद्वान श्री कोंकण सिद्ध को भी अपनी भक्ति के बल से पराजित कर दिया। एक समय में श्री सरोयोगी, भूतयोगी और महद्योगी ये तीनों आल्वार समस्त लोक का भ्रमण करते हुए स्वेच्छा से भक्तिसार योगी की साधना स्थल पर पधारे। कुछ समय बाद मुनित्रय विदा लेकर चले गये।

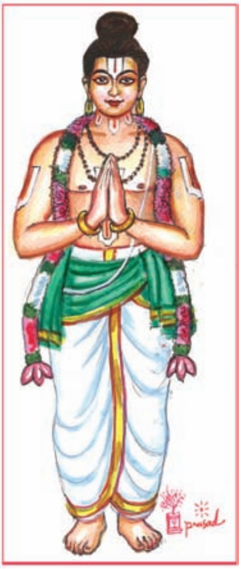

भगवान श्रीवेंकटेश की आज्ञा को शिरोधार्य कर योगीराज भक्तिसार काँचीपूरी गये और वहाँ की मृत्तिका से तिलक धारण करके भूसार क्षेत्र में आये और यहाँ श्रीजगन्नाथ भगवान को प्रणाम कर अष्टांग योग साधना संपन्न करते हुए कुछ समय तक मनोहर मंगल वल्लीपुर नामक क्षेत्र में निवास किया। इसके बाद आप सत्यव्रत क्षेत्र में चले गये और वहीं पर नित्य निवास करने लगे। श्री भक्तिसार योगी ने सरोयोगी सरोवर के तट पर भगवान श्रीमन्नारायण के चरणारविंदों का ध्यान करते हुए अष्टांग योग साधना रत रहकर सात सौ वर्षों तक निवास किया।

उस समय कणिकृष्ण नामक एक महानुभाव ने आपकी बहुत सेवा की, जिसके प्रभाव से वे महान भगवत भक्त बन गये। इसी समय एक वृद्ध महिला की इच्छा पूर्ति करते हुए उसे यौवन शरीर प्रदान किया। भक्तिसार सूरि अपना जीवन निर्वाह उच्छवृत्ति से किया करते थे। कुंभकोणम के श्रीविष्णु भगवान का विशेष मंगलाशासन करके भगवान के कृपा पात्र बने। हृदय कमल में भक्ति सहित निरंतर उत्तानशायी भगवान का ध्यान करते हुये योगी भक्तिसार २३०० वर्ष तक दिव्य क्षेत्र कुंभकोणम में निवास किया। ३७०० वर्ष तक भूतल पर निवास किया। इससे पूर्व उन्होंने एक हजार वर्ष तक का समय अन्यान्य स्थलों में प्रचार कार्य में व्यतीत किया। जिसके प्रमाण से उनकी आयु ७००० वर्ष की थी। श्री भक्तिसार स्वामीजी ने दो दिव्यप्रबंध की रचना की। नानमुहन तिरु अंदादि जिसे चतुरमुखादि नाम से जाना जाता है, इसमें ९६ गाथाएँ हैं। तिरुचंद विरुत्तम यानी श्रीचंद्रवृत्त के नाम से प्रसिद्ध हैं, इसमें १२० गाथाएँ गायी गयी हैं। भक्तिसार स्वामी ने कुल १६ दिव्यदेशों के भगवान का मंगलाशासन किया है।

शिक्षा -

सन्तों का स्वभाव लोक कल्याण का होता है। श्री भक्तिसार मुनि संसार के कल्याण के लिये कष्ट सहन करके प्रचार-प्रसार के लिए नित्य यात्रा किया करते थे। अपनी त्यागमयी वृत्ति से देवताओं को भी आश्चर्य चकित कर देते हैं। अपने शिष्य के उज्जीवन के लिये सदा तत्पर रहते थे। अपने अनुभव से संसार को यह निर्णय सिद्धान्त दिया कि- मनुष्य के लिये श्रीमन्नारायण के युगल चरणारविन्द एक मात्र सारतम पाने की वस्तु है, अन्य सब कुछ निःसार है।

कन्नड
हरिदासवरेण्य

श्री वादिराजस्वामी

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - श्रीमती सी.मंजुला

बच्चों! ‘श्री शनीन हुदो शेषाचलवासनीन हुदो’ ‘सारिदेनिन्न वेंकट’ ‘तालुविकेगिंतन्यतपवुइल्लि’ ‘कुदुरे बंदिदे चेल्व’ नाम के सुप्रसिद्ध गीतों को आप भजन के रूप में सुनते है न! ऐसे अनेक गीतों को संस्कृत, कन्नड भाषाओं में रचना करनेवाला व्यक्ति ही श्री वादिराजस्वामी जी थे। इन्होंने श्री हयग्रीव के उपासक थे। ‘हयवदन’ इनका अनित्य नाम था। पाँच बार उडिपि कृष्ण की पूजा की। ‘लक्ष्मीभरण’ नाम की पुस्तक की रचना कर श्रीनिवास को समर्पण करते हुए सालग्रामहार श्रीनिवास भगवान को भेंट करने की प्रशस्ति प्राप्त की। रुक्मिणीशविजयम्, तीर्थप्रबंध, युक्तिमल्लिका, सरसभारतीविलास जैसे ग्रंथों के साथ-साथ संस्कृत में दशावतार स्त्रोत्रों को एवं कन्नड में देवरनामों की रचना की। दक्षिण कन्नड जिले में रहे कुंभकासि क्षेत्र के पास स्थित हुविनकेरे गाँव में रामाचार्य एवं सरस्वती दंपति को श्री वादिराजस्वामी जी बेटे के रूप में जन्म हुआ। वे कारण जन्म थे।

पहले गुरूजी ने इनको ‘भूवराह’ नाम से बुलाते थे। वागीशतीर्थों के पालन-पोषण में बडे हुए भूवराह समय के अनुसार अपनी तेज बुद्धि एवं विद्याविज्ञान की वजह से गुरुओं के लिए आश्चर्यचकित करते हुए यौवन में आयतीश्वर के जरिए सन्यास स्वीकार करके श्री वादिराजस्वामी जी के नाम से सुप्रसिद्ध हुए। स्वादीमठादीश होने के नाते श्रीमन्मद्वाचार्य ने श्रीकृष्ण की पूजा के लिए स्थापित किए हुए अष्टमठों में इन्होंने एक है। इन्होंने अपने जीवन में अनेक महिमाओं को दिखाए थे।

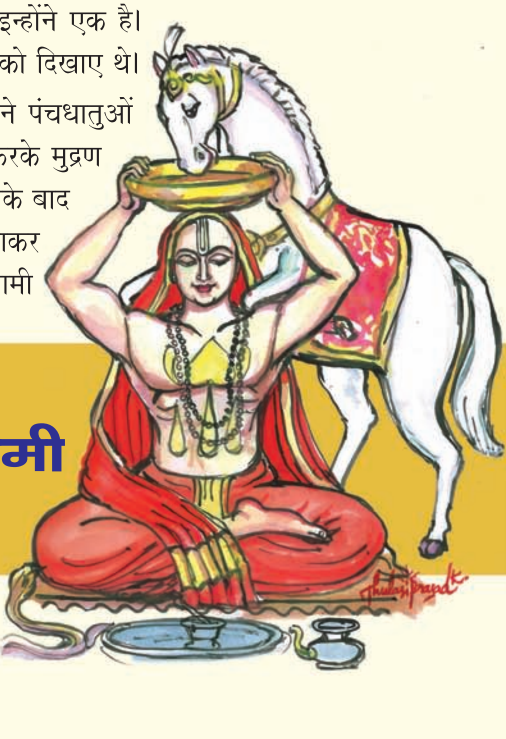
Thulasi Prasad K.

एक समय की बात है। एक सुनार ने पंचधातुओं से गणपति की मूर्ति बनाने का संकल्प करके मुद्रण करने से हयग्रीव की तरह आया था। उसके बाद उस सुनार के स्वप्न में भगवान ने दिखाकर कहा कि- ‘‘इस मूर्ति को श्री वादिराजस्वामी

जी को दे।'' भगवान के कहनानुसार तुरन्त उन्होंने उस मूर्ति को श्री वादिराजस्वामी जी को सौंपा गया। उस दिन से संस्थान में भूवराह नरसिंह मूर्तियों सहित इस हयग्रीव की पूजा करते समय पूजात्य में माने नैवेद्य के समय सफेद घोडा इनके सामने प्रत्यक्ष होता था। उस समय इन्होंने चने से खीर बनाकर उनके सामने बडे बर्तन में उसको डालकर सर को जरा नीचे करने पर उस घोडे ने अपने दोनों पैरों को इनकी भुजाओं के ऊपर रखकर खीर को खाकर जाता था।

एक और बार पंडरपुर में इन्होंने हयग्रीव की मूर्ति की पूजा करते समय उधर समीप में चने के खेत में एक सफेद घोडा चर रहा था। यह घोडा स्वामीजी के मठ से आकर हर दिन खा रहा है। इसको वजह से मेरी फसल नष्ट हो रही है। ऐसा सोचकर खेत के मालिक ने श्री वादिराजस्वामी के सामने शिकायत करने पर श्री राज जी कहा था कि- ''कल तक आप की फसल दुगना होगा।'' मालिक को जाने के लिए कहा था। उस प्रकार अगले दिन आकर देखने पर खेत भर चने के गुच्छों से परिपूर्ण रूप से भरे हुए थे।

एक बार इन्होंने एक जैन मंदिर में अत्यंत कीमती मुद्रणों से बनाई हुई एक मूर्ति को देखने से वह विठ्ठल के रूप में बदल गया। अरसष्ट नामक नायक के सामंतराज के दामाद अकाल मरण के लिए कारणभूत होगा। तब इन्होंने 'लक्ष्मीशोभन' नाम के गीत की रचना कर, गाना गाकर उनको फिर से जीवित करा दिया। इन्होंने अपने जीवन में दिखाए हुए महिमाएँ इतना-उतना नहीं है। उसको लिखने से एक बडा ग्रंथ हो सकता है। कन्नड में इनके लिखे हुए असंख्याक कृतियों में हर दिन सफेद घोडे के रूप में आए हुए हयग्रीव की तरह है।

''कुदिरेबंदिगे चेल्व कुदुरेबंदिदे'' गीत को समझने से चित्र के रूप में आँखों के सामने दिखाई पडता है। सीधी पद्धति में प्रबोधात्मक नीति को प्रबोध करनेवाले गीतों को गाकर लोगों में शांति गुण को बढावा दिया गया। ''तालविकेगिंतन्यतपविल्लि'' कहा जाता है। तालिमि (सहनशीलता) से बढकर तपस्या नहीं है। दुष्टों की बातों को सहन करे, मुश्किल होने पर सिकुडे नहीं होना चाहिए। इस प्रकार जनों के मन में शांति रूपी बीजों को डालकर मन को सांत्वना कराकर १२० सालों तक जीवन बिताया। स्वादीक्षेत्र पर पंचवृंदावन में आजकल भी जलनेवाले स्वनों को बचा रहे हैं।

❀

चित्रकथा

श्री स्वामिपुष्करिणी माहात्म्य

तेलुगु में -
श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री के.द्वारकानाथ

नंद, चंद्रवंशीय राजा था। राजा, वृद्धावस्था में अपने पुत्र धर्मगुप्त को राज्य सौंपकर रेवा नदी के कूल पर तपस्या करने चला गया। धर्मगुप्त आखेट खेलते समय, एक दिन को सिंह से घायल होकर, भाग-दौडकर एक पेड पर चढ़ बैठा। उसी पेड पर बैठा एक बालू मनुष्य की भाषा में बोलने लगा -

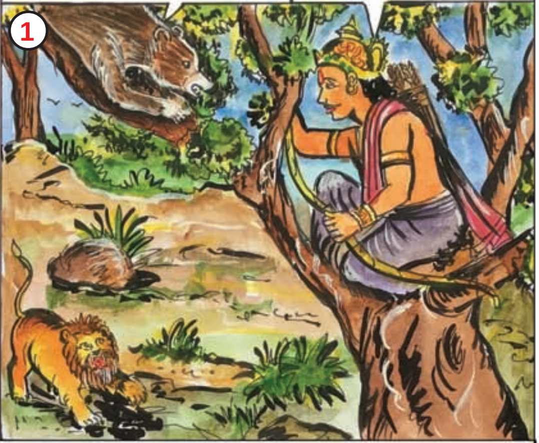
"हे राजा! सिंह पेड के नीचे ही बैठा हुआ। वह हम दोनों को खाने के इंतजार में है।
हे बालू! तुमने सही कहा। बोलो अब हम क्या ही करें?
1

बालू ने सोचने के बाद राजा से एक धर्मपरक समझौता किया।

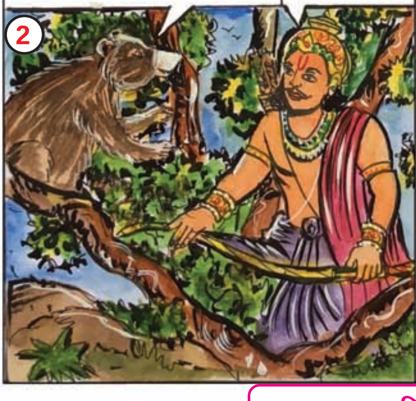
हे राजा! तुम पहले आराम से विश्राम करो। मैं तुम्हारा ख्याल रखूँगा और तुम्हें नीचे गिरने से बचाऊँगा।
ठीक है बालू!
2

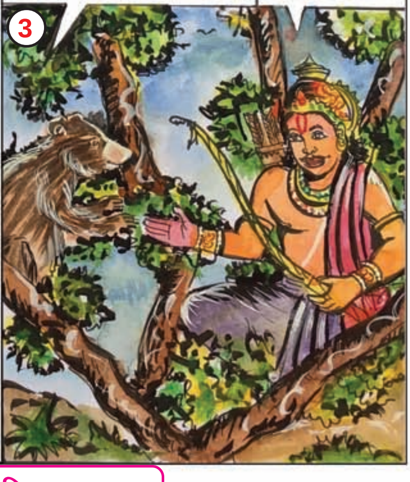
बाद में मैं विश्राम करुँगा, तब तुम्हें मेरा ख्याल रखना होगा। ठीक है न...
ठीक है मेरा दोस्त!
3

समझौते के अनुसार, सबसे पहले राजा सो गया। बालू ने उसकी रखवाली की। पेड के नीचे का सिंह, बालू से तब ऐसा कहने लगा...

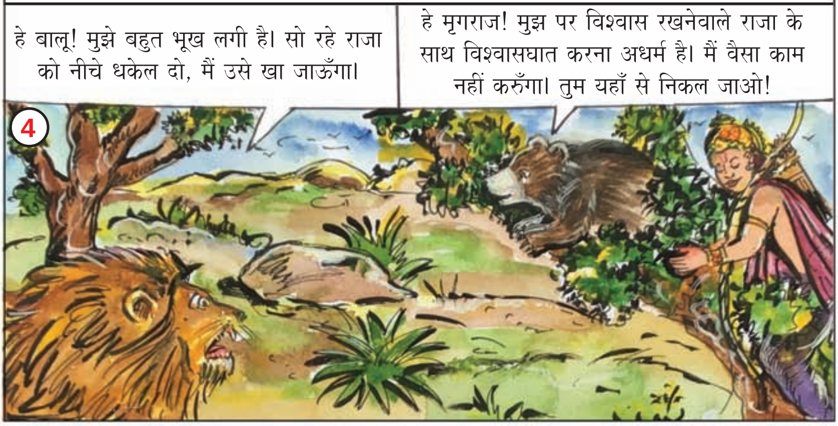
4
हे बालू! मुझे बहुत भूख लगी है। सो रहे राजा को नीचे धकेल दो, मैं उसे खा जाऊँगा।
हे मृगराज! मुझ पर विश्वास रखनेवाले राजा के साथ विश्वासघात करना अधर्म है। मैं वैसा काम नहीं करुँगा। तुम यहाँ से निकल जाओ!

बाद में बालू सो गया और राजा उसका ख्याल रखने लगा। सिंह ने राजा पर विश्वास करके ऐसा कहा -

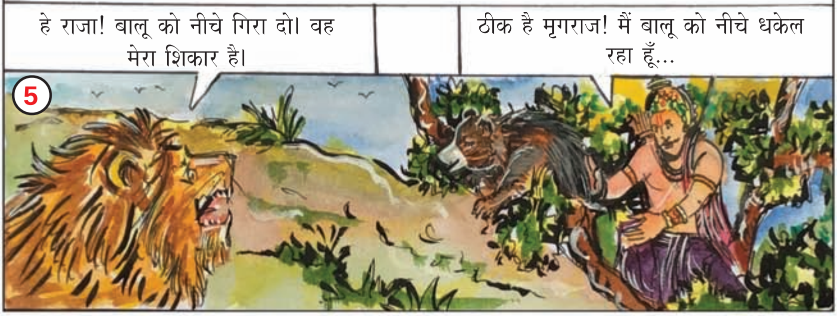
5
हे राजा! बालू को नीचे गिरा दो। वह मेरा शिकार है।
ठीक है मृगराज! मैं बालू को नीचे धकेल रहा हूँ...

बिना सोचे-विचारे, राजा, सोते बालू को नीचे धकेलने को था, कि बालू इतने में नींद से जागकर नीचे गिरते अपने को आप बचा लिया। तब राजा के पास आकर बालू ने बड़े क्रोध से ऐसा कहा -

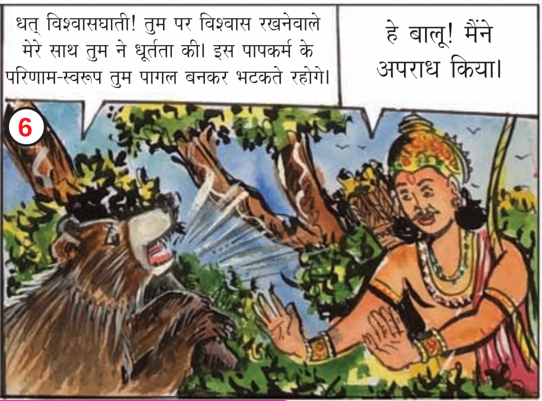
6
धत् विश्वासघाती! तुम पर विश्वास रखनेवाले मेरे साथ तुम ने धूर्तता की। इस पापकर्म के परिणाम-स्वरूप तुम पागल बनकर भटकते रहोगे।
हे बालू! मैंने अपराध किया।

धर्मगुप्त पागल बनकर दर-दर भटकने लगा। उसकी मंत्री परिषद् उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते किसी एक जगह पर पकडा। उसे, उसके पिता नंद के पास ले गये।

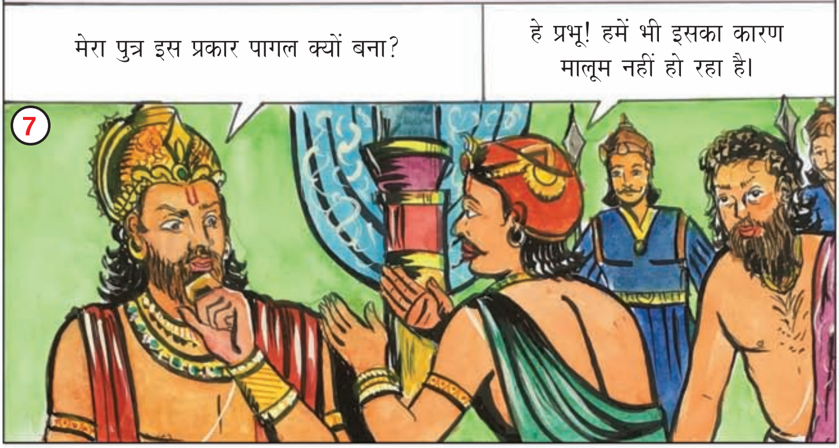
7
मेरा पुत्र इस प्रकार पागल क्यों बना?
हे प्रभू! हमें भी इसका कारण मालूम नहीं हो रहा है।

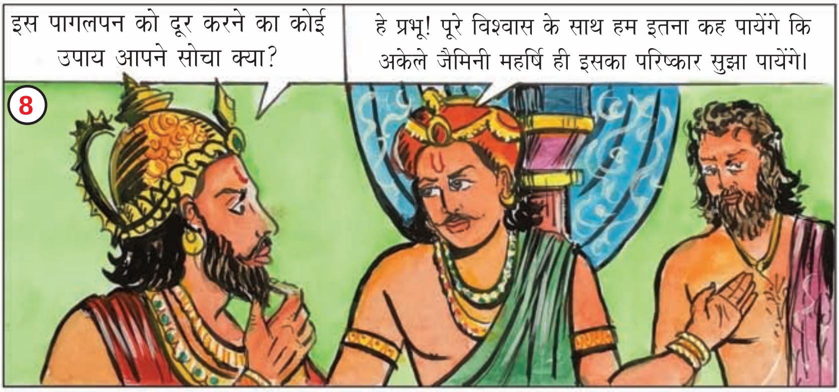
8
इस पागलपन को दूर करने का कोई उपाय आपने सोचा क्या?
हे प्रभू! पूरे विश्वास के साथ हम इतना कह पायेंगे कि अकेले जैमिनी महर्षि ही इसका परिष्कार सुझा पायेंगे।

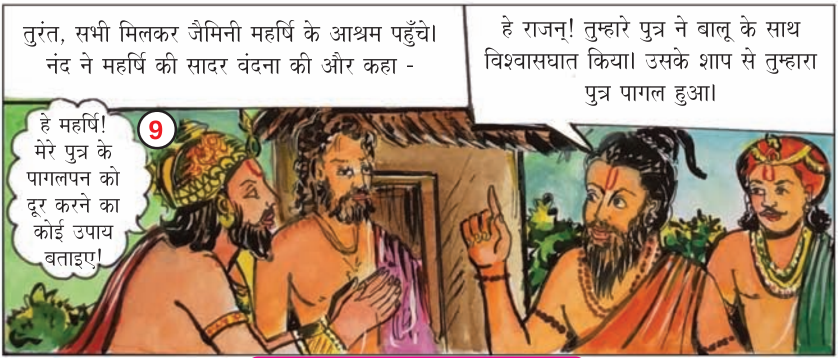
तुरंत, सभी मिलकर जैमिनी महर्षि के आश्रम पहुँचे। नंद ने महर्षि की सादर वंदना की और कहा -

9
हे महर्षि! मेरे पुत्र के पागलपन को दूर करने का कोई उपाय बताइए!
हे राजन्! तुम्हारे पुत्र ने बालू के साथ विश्वासघात किया। उसके शाप से तुम्हारा पुत्र पागल हुआ।

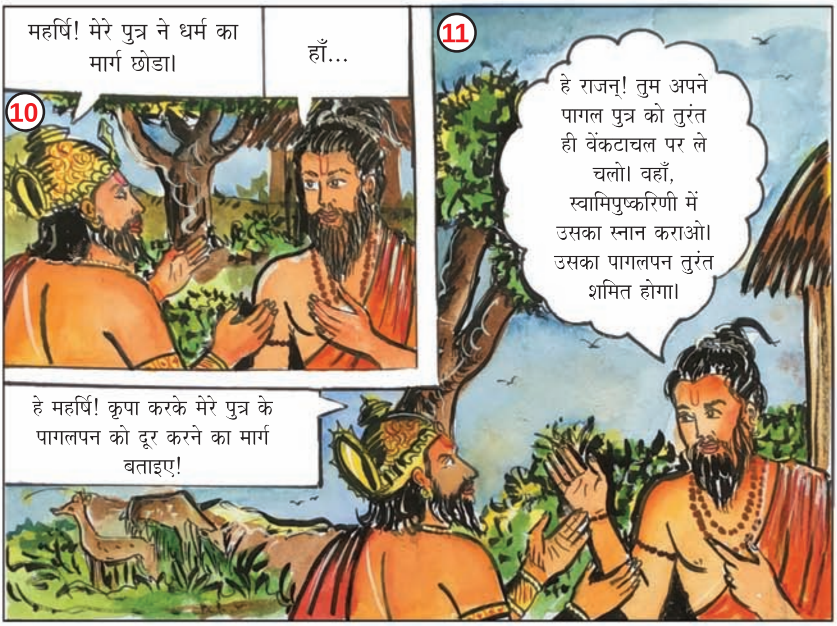
महर्षि! मेरे पुत्र ने धर्म का मार्ग छोडा।
हाँ...
10
11
हे राजन्! तुम अपने पागल पुत्र को तुरंत ही वेंकटाचल पर ले चलो। वहाँ, स्वामिपुष्करिणी में उसका स्नान कराओ। उसका पागलपन तुरंत शमित होगा।
हे महर्षि! कृपा करके मेरे पुत्र के पागलपन को दूर करने का मार्ग बताइए!

नंद, अपने पागल बेटे धर्मगुप्त को वेंकटाचल पर ले गया और वहाँ स्वामिपुष्करिणी में स्नान कराया। आश्चर्य! धर्मगुप्त ठीक हो गया, सच्चा बन गया।

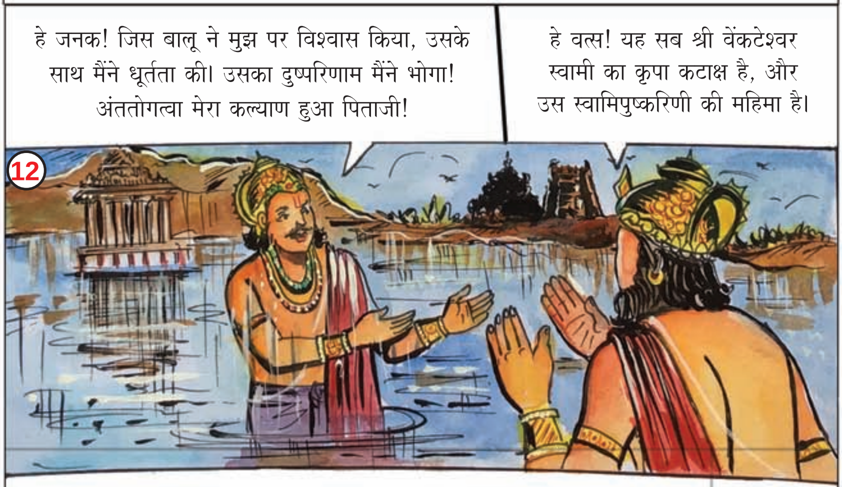
हे जनक! जिस बालू ने मुझ पर विश्वास किया, उसके साथ मैंने धूर्तता की। उसका दुष्परिणाम मैंने भोगा! अंततोगत्वा मेरा कल्याण हुआ पिताजी!
हे वत्स! यह सब श्री वेंकटेश्वर स्वामी का कृपा कटाक्ष है, और उस स्वामिपुष्करिणी की महिमा है।
12

अगले महीने में और एक कहानी के बारे में जानेंगे।

स्वस्ति!!

बालनीति

सब से कीमती हीरा

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

राजशेखर नाम का एक किसान रहता था। वह अपने खेत में हल चला रहा था। उसका बेटा श्रीमन भी वहीं था। उसको खेत में एक हीरा मिला। वह बहुत चमक रहा था। चमक उसे बहुत अच्छी लगी। वह उसको लेकर खेलने लगा। कुछ देर बाद श्रीमन हीरा लेकर घर पहुंचा, माँ को दिखाया। फिर साथियों को दिखाने घर से निकल पड़ा। साथियों ने चमकीले पत्थर को देखा तो मांगने लगे। उसने उन्हें दिया नहीं।

एक लड़के को वह हीरा बहुत अच्छा लग रहा था। वह रोते-रोते घर गया। उसने अपने पिताजी से कहा- ''मुझे हीरा चाहिए।'' उसके पिताजी ने पूछा- ''हीरा क्या चीज है?'' लड़के ने अपने पिताजी से कहा- ''मैंने एक लड़के के पास देखा है। वह बहुत चमकता है। उसकी चमक बहुत अच्छी लगती है। आप उसे किसी तरह उस लड़के से लीजिए।''

उसका पिता हीरेवाले लड़के के पिता के पास किसी तरह पहुँचे और साठ रुपए देकर वह हीरा ले आया। श्रीमन बहुत रोया, लेकिन पैसे के लालच में उसका पिता हीरा बेचने के लिए मजबूर हो गया था।

कुछ दिनों के बाद उसके पड़ोसी लड़के को वह हीरा बहुत पसंद आया। वह हीरे के लिए रोने लगा। उसके माँ-बाप धनी थे। उन्होंने छह सौ रुपए देकर खरीद लिया। इस तरह हीरे का मूल्य बढ़ गया। बढ़ते-बढ़ते उस हीरे का मूल्य तीन लाख अशर्फियां हो गया।

लेकिन जिस आदमी ने उस हीरे को तीन लाख अशर्फियों में खरीद लिया। उसका एक समय उससे पेट नहीं भर सकता है? फिर दुनियावाले ऐसे पत्थरों के पीछे क्यों पागल बने? पेट तो भरता है अनाज से, दूध से, मक्खन

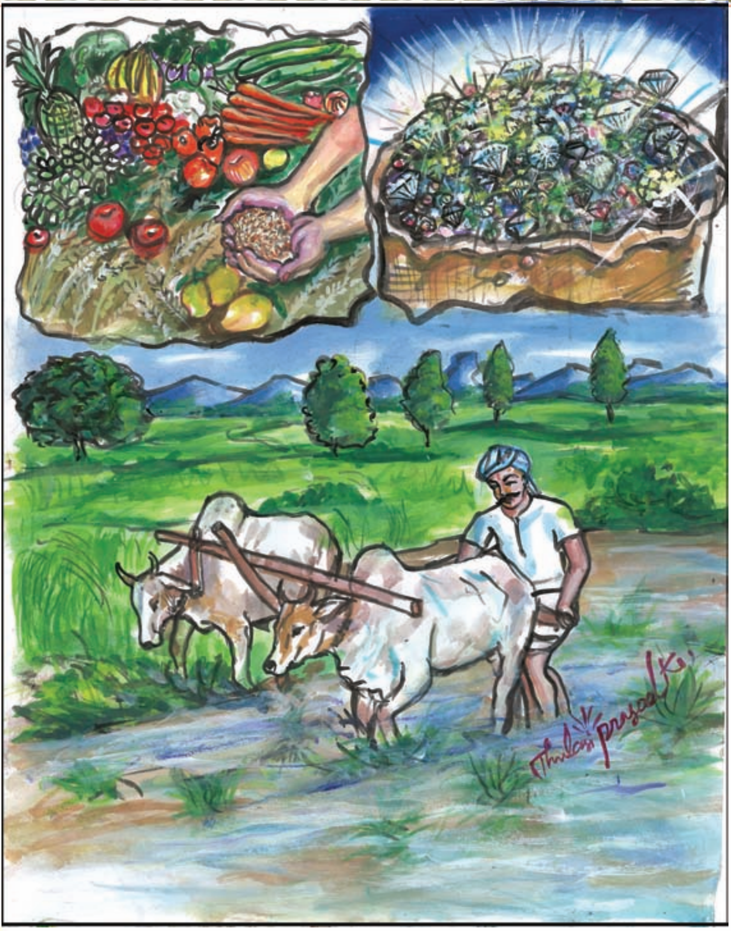

से और घी से। फिर इन खाने की चीजों से बढ़कर दूसरा कोई हीरा नहीं हो सकता।

शिक्षा : इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि- संसार में सब से अच्छी वस्तु भोजन सामग्री है। क्योंकि उससे पेट भर सकता है जबकि हीरा मात्र एक पत्थर, उसे देखा जा कसता है लेकिन पेट भरा नहीं जा सकता। अतः हमें यदि पहली आवश्यकता भोजन की है तो हीरे में पैसे न गंवाकर पहले अनाज और भोजन सामग्री के लिए पेड़-पौधे और फसलें उगानी चाहिए।

विशिष्ट बालक

नाम : यु.भरत शर्मा

कक्षा : नौवी कक्षा

जन्म : १७ मई, २००६

माताजी : श्रीमती यु.शैलजा

पिताजी : श्री उप्पलधडियम राजीवलोचन शर्मा

पाठशाला : भारतीय विद्याभवन्स श्रीवेंकटेश्वर विद्यालय, तिरुपति केन्द्र।

विशेष प्रतिभा - विभिन्नक्षेत्र : मृदंग अभिविन्यास, स्वरसंगीत, तेलुगु साहित्य, शतकरचना, श्लोक पठन, एकल अभिनय, चित्रकारी, शतरंज, अबाकस, शिक्षाक्षेत्र, नेतृत्व की विशेषताएँ प्रतिभा के रूप में विद्यमान हैं।

लक्ष्य : तेलुगु साहित्य अनुसंधान और तेलुगु भाषा का विकास।

उपलब्धियाँ : २००९ - एल.के.जी. से भगवद्गीता श्लोक प्रतियोगिताओं में पुरस्कार।

२०११ - पहली कक्षा में मार्ग चिन्मय विद्यालय, तिरुपति द्वारा आयोजित गोविंद नाम प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था।

२०१३ - दूसरी कक्षा में ही भारतीय विद्याभवन, तिरुपति द्वारा आयोजित पुस्तक मेले के में बम्मेर पोतना की तरह एकल अभिनय करके पुरस्कार प्राप्त किया था।

२०१४ - चिन्मय मिशन द्वारा आयोजित जिला स्तरीय भगवद्गीता प्रतियोगिताओं तीसरा पुरस्कार जीता।

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित भगवद्गीता प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था।

२०१५ - विजयवाड़ा में एस.आई.पी अबाकस द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में ‘एस.आई.पी.रीजिनल् प्राडिजी’ पुरस्कार प्राप्त किया था।

२०१७ - सत्य साई बालविकास के द्वारा आयोजित जिला स्तरीय एकल अभिनय और संगीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता।

२०१८ -
1) रामकृष्ण मिशन में स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर ‘विनायक चॉदी’ की मूर्ति जीती।
2) तिरुपति फिल्म सोसाइटी के द्वारा आयोजित एकल अभिनय प्रतियोगिता में दुर्योधन की भूमिका निभाने की वजह से पहला पुरस्कार जीता।
3) तिरुपति विज्ञान केन्द्र के द्वारा आयोजित ‘कला उत्सव’ जिला स्तरीय मृदंग प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा केलिए प्रथम पुरस्कार जीता।

२०२० - संस्कार भारती के द्वारा आयोजित ऑनलाइन राज्य स्तरीय कविता प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार जीता।

*

‘क्विज’

आयोजक - श्रीमती एन.मनोरमा

१) सूर्य भगवान के रथसारथी कौन है?

अ) नंदी	आ) मयूर
इ) अनूर	ई) सिंह

२) श्रीकृष्ण भगवान का पालन-पोषण करने वाली माँ कौन है?

अ) यशोदा	आ) वकुला
इ) दिति	ई) अनसूया

३) वायुदेव के वरप्रसाद से कुंति देवी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम...

अ) भीष्म	आ) बलराम
इ) भीमसेन	ई) भृगु

४) व्यासमुनि का और एक नाम क्या है?

अ) कृष्णद्वैपायन	आ) वैशंपायन
इ) वाल्मीकि	ई) धनुंजय

५) राजा द्रुपद का पुत्र तथा द्रौपदी का भाई कौन है?

अ) धृतराष्ट्र	आ) धूम्रवर्ण
इ) धृष्टद्युम्न	ई) धेनुकासुर

६) वाराणसि में विराजित देवी माँ कौन है?

अ) कामाक्षी	आ) मीनाक्षी
इ) वैष्णवीदेवी	ई) विशालाक्षी

७) श्री सरस्वती देवी के ससुर कौन है?

अ) परमेश्वरजी	आ) ब्रह्माजी
इ) श्रीमहाविष्णु	ई) कोई नही

जवाब - १) इ २) अ ३) इ ४) अ ५) इ ६) ई ७) इ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

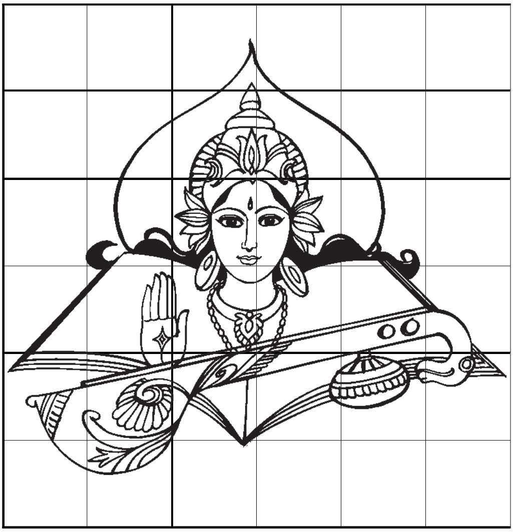

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

ब्रह्मोत्सवों में बालकलाकार

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
printing on 30-06-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under
"RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11- 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

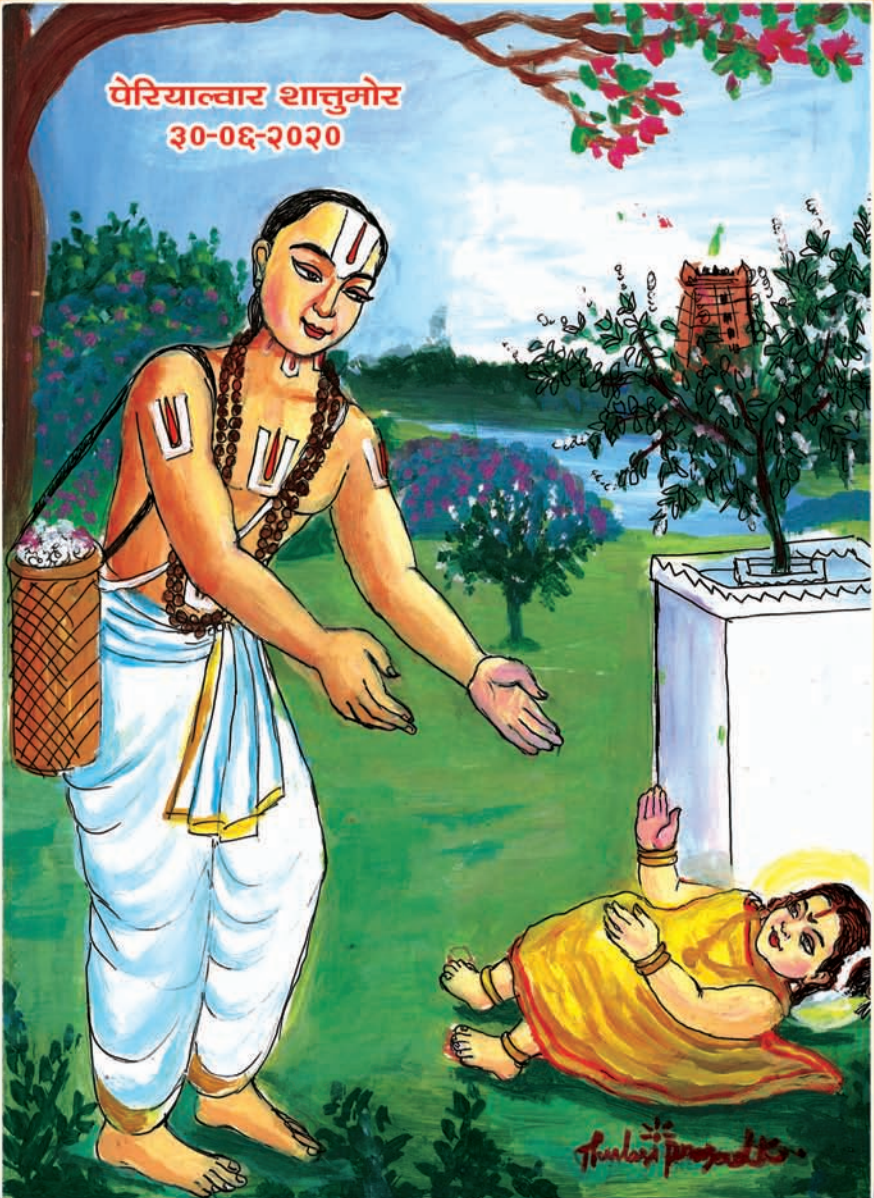

पेरियाल्वार शात्तुमोर
३०-०६-२०२०

Thulasi prasad K.